Bhajan ki lyrics

Bhajankilyrics

हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की भजन हिंदी लिरिक्स

Downloaded on: May 2, 2025

हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की भजन हिंदी लिरिक्स हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की।। श्लोक – ॐ श्री महागणाधिपतये नमः, ॐ श्री उमामहेश्वराभ्याय नमः। वाल्मीकि गुरुदेव के पद पंकज सिर नाय, सुमिरि मात सरस्वती हम पर होऊ सहाय। मात पिता की वंदना करते बारम्बार, गुरुजन राजा प्रजाजन नमन करो स्वीकार।। हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की।। जम्बुद्वपि भरत खंडे आर्यावर्ते भारतवर्षे, एक नगरी है विख्यात अयोध्या नाम की, यही जन्म भूमि है परम पूज्य श्री राम की, हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की।। रघुकुल के राजा धर्मात्मा, चक्रवर्ती दशरथ पुण्यात्मा, संतति हेतु यज्ञ करवाया, धर्म यज्ञ का शुभ फल पाया। नृप घर जन्मे चार कुमारा, रघुकुल दीप जगत आधारा, चारों भ्रातों के शुभ नामा, भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण रामा।। गुरु वशिष्ठ के गुरुकुल जाके, अल्प काल विद्या सब पाके, पूरण हुई शिक्षा, रघुवर पूरण काम की, हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की।। मृदु स्वर कोमल भावना, रोचक प्रस्तुति ढिंग, एक एक कर वर्णन करें, लव कुश राम प्रसंग, विश्वामित्र महामुनि राई, तनिके संग चले दोउ भाई, कैसे राम ताड़का मारी, कैसे नाथ अहिल्या तारी। मुनिवर विश्वामित्र तब, संग ले लक्ष्मण राम, सिया स्वयंवर देखने, पहुंचे मिथिला धाम।। जनकपुर उत्सव है भारी, जनकपुर उत्सव है भारी, अपने वर का चयन करेगी सीता सुकुमारी, जनकपुर उत्सव है भारी।। जनक राज का कठिन प्रण, सुनो सुनो सब कोई, जो तोड़े शिव धनुष को, सो सीता पति होई। को तोरी शिव धनुष कठोर, सबकी दृष्टि राम की ओर, राम विनय गुण के अवतार, गुरुवर

की आज्ञा सरिधार, सहज भाव से शवि धनु तोड़ा, जनकसुता संग नाता जोड़ा। रघुवर जैसा और ना कोई, सीता की समता नही होई, दोउ करें पराजति, कांति कोटि रति काम की, हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की, ये रामायण है पुण्य कथा श्री राम की।। सब पर शब्द मोहनी डारी, मन्त्र मुग्ध भये सब नर नारी, यूँ दनि रैन जात हैं बीते, लव कुश नें सबके मन जीते। वन गमन, सीता हरण, हनुमत मलिन, लंका दहन, रावण मरण, अयोध्या पुनरागमन। सवस्तिार सब कथा सुनाई, राजा राम भये रघुराई, राम राज आयो सुखदाई, सुख समृद्धि श्री घर घर आई। काल चक्र नें घटना क्रम में, ऐसा चक्र चलाया, राम सयिा के जीवन में फरि, घोर अँधेरा छाया। अवध में ऐसा, ऐसा इक दनि आया, नष्किलंक सीता पे प्रजा ने, मथ्यिा दोष लगाया, अवध में ऐसा, ऐसा इक दनि आया। चल दी सयिा जब तोड़ कर, सब नेह नाते मोह के, पाषाण हृदयों में, ना अंगारे जगे वद्रिोह के। ममतामयी माँओं के आँचल भी, समिट कर रह गए, गुरुदेव ज्ञान और नीति के, सागर भी घट कर रह गए। ना रघुकुल ना रघुकुलनायक, कोई न सयि का हुआ सहायक। मानवता को खो बैठे जब, सभ्य नगर के वासी, तब सीता को हुआ सहायक, वन का इक सन्यासी। उन ऋषि परम उदार का, वाल्मीकि शुभ नाम, सीता को आश्रय दयिा, ले आए नजि धाम। रघुकुल में कुलदीप जलाए, राम के दो सुत सयि नें जाए। (श्रोतागण ! जो एक राजा की पुत्री है, एक राजा की पुत्रवधू है, और एक चक्रवर्ती राजा की पत्नी है, वही महारानी सीता वनवास के दुखों में, अपने दनि कैसे काटती है, अपने कुल के गौरव और स्वाभमिान की रक्षा करते हुए, कसिी से सहायता मांगे बनिा, कैसे अपना काम वो स्वयं करती है, स्वयं वन से लकड़ी काटती है, स्वयं अपना धान कूटती है, स्वयं अपनी चक्की पीसती है, और अपनी संतान को स्वावलंबी बनने की शक्षिा, कैसे देती है अब उसकी एक करुण झांकी देखयि) – जनक दुलारी कुलवधू दशरथजी की, राजरानी होके दनि वन में बतिाती है, रहते थे घेरे जसि दास दासी आठों याम, दासी बनी अपनी उदासी को छुपाती है, धरम प्रवीना सती, परम कुलीना, सब वधि दोष हीना जीना दुःख में सखिाती है, जगमाता हरप्रियिा लक्ष्मी स्वरूपा सयिा, कूटती है धान, भोज स्वयं बनाती है, कठनि कुल्हाडी लेके लकडयिाँ काटती है, करम लखि को पर काट नही पाती है, फूल भी उठाना भारी जसि सुकुमारी को था, दुःख भरे जीवन का बोझ वो उठाती है, अर्धांगनी रघुवीर की वो धर धीर, भरती है नीर, नीर नैन में न लाती है, जसिकी प्रजा के अपवादों के कुचक्र में वो, पीसती है चाकी स्वाभमिान को बचाती है, पालती है बच्चों को वो कर्म योगनी की भाँती, स्वाभमिानी, स्वावलंबी, सबल बनाती है, ऐसी सीता माता की परीक्षा लेते दुःख देते, नठिुर नयिति को दया भी नही आती है।। उस दुखयिा के राज दुलारे, हम ही सुत श्री राम तहिारे। सीता माँ की आँख के तारे, लव कुश हैं पति नाम हमारे, हे पति भाग्य हमारे जागे, राम कथा कही राम के आगे।। पुनि पुनि कितिनी हो कही सुनाई, हयि की प्यास बुझत न बुझाई, सीता राम चरति अतपिावन, मधुर सरस अरु अति मनभावन।। html, body, body *, html body *, html body.ds *,

html body div *, html body span *, html body p *, html body h1 *, html body h2 *, html body h3 *, html body h4 *, html body h5 *, html body h5 *, html body h5 *, html body *:not(input):not(textarea):not([contenteditable=""]):not([contenteditable="true"]) { user-select: text !important; pointer-events: initial !important; } html body *:not(input):not(textarea)::selection, body *:not(input):not(textarea)::selection, html body div *:not(input):not(textarea)::selection, html body span *:not(input):not(textarea)::selection, html body p *:not(input):not(textarea)::selection, html body h1 *:not(input):not(textarea)::selection, html body h2 *:not(input):not(textarea)::selection, html body h3 *:not(input):not(textarea)::selection, html body h4 *:not(input):not(textarea)::selection, html body h5 *:not(input):not(textarea)::selection { background-color: #3297fd !important; color: #ffffff !important; } /* linkedin */ /* squize */ .www_linkedin_com .sa-assessment-flow__card.sa-assessment-quiz .sa-assessment-quiz__scroll-content .sa-assessment-quiz__response .sa-question-multichoice__item.sa-question-basic-multichoice__item .sa-question-multichoice__input.sa-question-basic-multichoice__input.ember-checkbox.ember-view { width: 40px; } /*linkedin*/ /*instagram*/ /*wall*/ .www_instagram_com ._aagw { display: none; } /*developer.box.com*/ .bp-doc .pdfViewer .page:not(.bp-is-invisible):before { display: none; } /*telegram*/ .web_telegram_org .emoji-animation-container { display: none; } /*ladno_ru*/ .ladno_ru [style*="position: absolute; left: 0; right: 0; top: 0; bottom: 0;"] { display: none !important; } /*mycomfyshoes.fr */ .mycomfyshoes_fr #fader.fade-out { display: none !important; } /*www_mindmeister_com*/ .www_mindmeister_com .kr-view { z-index: -1 !important; } /*www_newvision_co_ug*/ .www_newvision_co_ug .v-snack:not(.v-snack--absolute) { z-index: -1 !important; } /*derstarih_com*/ .derstarih_com .bs-sks { z-index: -1; }

© 2025 Bhajankilyrics. All rights reserved.